भूदानमें अगला कदम

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ | सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई | अंक ५२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २७ फरवरी, १९५४

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

अनोखी आवाजें

आजकल बम्बअी शहरमें अिस बातकी गरमागरम बहस चल रही है कि हमारी राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणालीमें अंग्रेजीका क्या स्थान है। यह शिक्षा-प्रणाली धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूपसे अपना स्वरूप पकड़ रही है, खास करके बम्बअी राज्यमें। बम्बअी राज्यकी सरकारने यह निर्णय किया है कि बच्चोंको अपनी मातृभाषामें शिक्षा दी जायगी। अिससे यह फलित होता है कि शिक्षाके माध्यमके रूपमें अंग्रेजी अुन्हीं बच्चों तक मर्यादित रहेगी, जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी है। सरकारने अंग्रेजीके अध्ययन पर किसी तरहका प्रतिबन्ध नहीं लगाया है।

अेक तरहसे देखा जाय तो बम्बअी सरकार जो कुछ कर रही है, वह कोअी नअी बात नहीं है। हमारी शिक्षामें अैसा सुधार करनेकी बात हमारे लोगोंने बरसों पहले सोची थी; और अगर हम कांग्रेसके रचनात्मक कार्यक्रम पर दृष्टि डालें, तो पता चलेगा कि यह सुधार अुसका अेक महत्त्वपूर्ण अंग है। लेकिन कुछ प्रमुख कांग्रेसजनोंको अिस अत्यन्त जरूरी और स्वाभाविक सुधारके खिलाफ लड़ाअी छेड़ते देखकर बड़ा दुःख होता है।

अैसा क्यों होना चाहिये, खास करके जबकि हम स्वतंत्र हैं? संस्कृति, अेकता और स्वतंत्रताके नारेकी आड़में काम कर रहे अिस भयंकर दकियानूसीपनका अेक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कारण हमें अमरीकी शिक्षाशास्त्री डॉ० हचिन्सके नीचेके कथनमें मिलता है। अपनी हालमें ही प्रकाशित 'दि कान्फ्लिक्ट ऑफ अेज्युकेशन' (शिक्षाका संघर्ष) नामक पुस्तकमें वे पश्चिमी शिक्षाके बारेमें कहते हैं :

"चूंकि पश्चिममें शिक्षा बहुत ज्यादा हद तक व्यक्तिगत भेदोंके सिद्धान्तके आधार पर खड़ी है — जिससे हरअेक बच्चे और अुसके व्यक्तिगत हितोंका अध्ययन, अुसके शुरूके दिनोंसे ही, शिक्षकोंका मुख्य काम माना जाता है और असामयिक तथा अत्यधिक विशेषज्ञता (स्पेशियलाअिजेशन) अमेरिकन कालेज और ब्रिटिश पब्लिक स्कूलकी सामान्य विशेषता बन गअी है — अिसलिअे यह दलील की जायगी कि सब बच्चोंके लिअे अुदार शिक्षाका कार्यक्रम मनुष्योंके बारेमें अेक सबसे महत्त्वकी चीजकी अुपेक्षा करता है। वह यह कि मनुष्य अेक-दूसरेसे भिन्न हैं। मैं अिसकी अुपेक्षा नहीं करता; मैं अिससे अिन्कार करता हूं। मैं व्यक्तिगत भेदोंके सत्यसे अिन्कार नहीं करता; लेकिन मैं अिसे माननेसे अिन्कार करता हूं कि अुस सत्यका मनुष्यके लिअे सबसे बड़ा महत्त्व है या वह अेक अैसा सत्य है, जिस पर कोअी शिक्षा-पद्धति खड़ी की जानी चाहिये।"

पिछले सौ-सवा सौ सालसे शिक्षाके जिस नमूने और सिद्धान्तोंने हमारा मार्गदर्शन किया है, अुनका आधार स्पष्ट ही पश्चिमकी अूपर बताअी गअी दृष्टि है। हमारे देशमें, विदेशी हुकूमतके कारण, शिक्षाके विदेशी माध्यम — अंग्रेजी — को लादनेकी दूसरी बुनियादी गलती की गअी; और अेक अैसी शिक्षाको सर्वसामान्य शिक्षाका व्यापक रूप दे दिया गया, जो हमारे शासकोंकी नौकरियोंमें जानेकी अिच्छा रखनेवाले कुछ ही लोगोंके लिअे थी और अिस तरह हमारे वर्गों और आवश्यकताओंके भेदके आधार पर खड़ी थी। जिसकी रचना कुछ लोगोंके लिअे की गअी थी, वह सबकी चीज बन गअी। अिस अत्याचारके भयंकर परिणाम होना अनिवार्य था। अुनमें से अेक परिणाम यह हुआ कि जिस देशमें पहले शिक्षितोंकी संख्या ८० प्रतिशत थी, वहां अशिक्षितोंकी संख्या ८० प्रतिशतसे ज्यादा हो गअी। आज शिक्षामें हम अितने पिछड़े हुअे हैं।

डॉ० हचिन्सने जिस गलतीका जिक्र किया है, अुसे पश्चिममें महसूस किया जा रहा है। वे कहते हैं :

"मनुष्य-मनुष्य भिन्न हैं। लेकिन वे समान भी हैं। और कमसे कम सभ्यताकी आजकी अवस्थामें मनुष्य जिन बातोंमें समान हैं, अुनका अुन बातोंसे ज्यादा महत्त्व है जिनमें वे भिन्न हैं। . . . आज हमें अैसी शिक्षाकी सबसे ज्यादा जरूरत है, जिसका अुद्देश्य हमारे व्यक्तित्वके विकासके बजाय हमारी सामान्य मानवताको बाहर लानेका हो। हमारे व्यक्तिगत भेदोंका अर्थ है कि हमारे व्यक्तिगत विकासमें भिन्नता होनी चाहिये। अगर हम सब अपनी व्यक्तिगत मानव शक्तियोंका अधिकसे अधिक विकास करनेका प्रयत्न करें, तो परिणामोंमें भेद होगा, क्योंकि हमारी व्यक्तिगत शक्तियोंमें भेद होता है। लेकिन यह भेद डिग्रीका होता है, प्रकारका नहीं।"

अंग्रेजीने न सिर्फ हमारे लोगोंको दो भागोंमें बांट दिया, बल्कि हममें से कुछको अुनसे भिन्न भी बना दिया। अिस विषयमें गांधीजीने कहा है :

"शिक्षाकी वर्तमान पद्धति किसी भी तरह देशकी आवश्यकताओंकी पूर्ति नहीं करती। अुच्च शिक्षाकी तमाम शाखाओंमें अंग्रेजी भाषाको माध्यम बना देनेके कारण अुसने अुच्च शिक्षा पाये हुअे मुट्ठी भर लोगों तथा अपढ़ जनसमुदायके बीच अेक स्थायी दीवार-सी खड़ी कर दी है। अिसकी वजहसे जनसाधारण तक छन-छनकर ज्ञानके जानेमें बड़ी रुकावट पैदा हो गअी है। अंग्रेजीको अिस तरह अत्यधिक महत्त्व देनेके कारण शिक्षित लोगों पर अितना अधिक भार पड़ गया है कि प्रत्यक्ष जीवन जीनेके लिअे अुनकी मानसिक शक्तियां पंगु हो गअी हैं और वे अपने ही देशमें विदेशियोंकी भांति बेगाने बन गये हैं।"
(हरिजनसेवक, २–१०–'३७)

सचमुच अिन अनोखी आवाजोंको सुनकर हंसी आती है, जो अब हमें कह रही हैं कि अंग्रेजीने हमारे बीच अेकता कायम कर दी थी! अैसा हास्यास्पद दावा अिन आवाजोंने भी कमसे कम पिछली पीढ़ीमें तो कभी नहीं किया था। लेकिन वह अलग बात है। अंग्रेजी हम सबकी जरूरत कभी नहीं बन सकती। और जिन कुछ

www.vinoba.in

लोगोंको अुसकी जरूरत है, अुनके लिअे वह अन्य कअी भाषाओं — हमारी और विदेशी — के साथ सुलभ बनाअी जानी चाहिये। लेकिन वैसा करनेका मतलब यह नहीं है कि अंग्रेजीको अेक अनिवार्य विषय और शिक्षाके माध्यमके रूपमें लोगों पर लादा जाय।

यह बड़े दुःखकी बात है कि स्वार्थसे प्रेरित पार्टियां अिस सादे सुधारको भी जानबूझकर यह दिखानेके लिअे अुलझनमें डाल रही हैं कि अंग्रेजी भाषाको हमारे अभ्यासमें से हटाया जा रहा है! लेकिन न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक — हर तरहके स्थापित स्वार्थोंका जिन्दा रहनेके लिअे अपना अनोखा तर्क होता है और अुसे और ज्यादा कठिनेके प्रयत्नमें पड़नेकी हमें जरूरत नहीं है।

१३-२-'५४ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

भूदान-आन्दोलनकी कार्यप्रणाली*

गया जिलेमें अब में चौथी बार प्रवेश कर रहा हूं। अिस वक्त संकल्प-पूर्ति होने तक वहांसे न हटनेकी बात है। अिसका अर्थ बहुत गंभीर हो जाता है। सब कार्यकर्ताओंको संबद्ध होना पड़ेगा। मिल-जुलकर और ढंगके साथ काममें लग जाना होगा। अिसके पीछे कुछ सुझाव में पेश कर रहा हूं:

(१) सब प्रकारकी जानकारी प्राप्त करना: थानेवार और गांववार जमीन कितनी अुपलब्ध है, छठे हिस्सेके अनुपातसे और भूमिहीनोंकी गरजसे कितनी जमीन प्राप्त करनी होगी, कितनी प्राप्त हुअी है, बड़े लोग कौन-कौन हैं, अित्यादि।

(२) गांव-गांवमें भूमिहीनोंके लिअे कितनी जमीन जरूरी है, यह जाननेके लिअे जिन गांवोंमें पहले कुछ जागृति हुअी हो और जहां जमीन भी मिली हो, वहां भूमिहीनोंकी सभा भी कर सकते हैं और अुनकी मांग गांववालोंके सामने रख सकते हैं। अिसमें वर्गभावनाको अुत्तेजन देनेका सवाल नहीं है, बल्कि हिसाबके साथ गांवका काम करनेका और गांवकी समस्या गांववालोंको समझानेका विचार है।

(३) विचार-प्रचारकी योजना।

हर गांवमें "भूदान-यज्ञ-विहार" का कोअी ग्राहक हो, जो खुद पढ़ेगा और हफ्तेमें अेक दफा गांवकी सभा करके अुनको पढ़कर सुनावेगा। दूसरा भी "सर्वोदय-साहित्य" गांव-गांव पढ़ा जाय, अैसी भी योजना करना।

(४) दान-पत्रोंकी अिष्ट संख्या पूर्ण करना।

बिना विचार समझाये दान नहीं लेना है। डराने-धमकानेकी सख्त मनाही है। दान लिखवानेवालेके भी दस्तखत दान-पत्र पर होने चाहियें।

(५) पुराने दान-पत्र, जिनमें खाता, खसरा-नंबर वगैरा भरना रह गये हों, पूर्ण करा लेना चाहिये। मुख्यतः अधिक जमीनके दान-पत्र फौरन पूर्ण होने चाहिये, जिससे भूमिके बंटवारेका काम जल्द शुरू किया जा सके।

(६) बड़े लोगोंके पास, जिनसे अुनका प्रेम-संबंध हो या अुन पर जिनका नैतिक वजन हो, अुनके द्वारा पहुंचनेकी योजना। जहां हमारे पत्रकी जरूरत हो, वहां पत्र भी दिया जा सकता है।

(७) सब पक्ष और अपक्ष कार्यकर्ताओंका पूरा सहयोग हासिल करना, और जिससे जितना काम मिलेगा, अुतना संतोषपूर्वक ले लेना चाहिये। जिससे काम नहीं मिलेगा, अुसकी निंदा नहीं करनी चाहिये। सबका मार्ग बढ़ाना, सबकी अिज्जत करना, सबमें सौमनस्य स्थापित करना, यही हमारा अभीष्ट है।

(८) जहां हम जायेंगे, विशेष व्यक्तियोंसे अलग-अलग बात भी करना चाहेंगे। जिनसे बात करनी हो, अुनका नाम चाहेंगे और अुनके अुद्योग आदिके बारेमें जानकारी संक्षिप्त रूपमें हमारे पास देनी चाहिये, जिससे ज्ञानपूर्वक बात हो सके।

(९) जहां हम जायेंगे, वहां हमारी तैयारीमें अेक-आध टोली काम करती होगी। वैसे ही, स्थान छोड़नेके बाद वातावरणका लाभ अुठानेवाली टोली काम करती रहनी चाहिये।

(१०) गया शहरमें और सबडिविजनके मुख्य गांवोंमें संपत्ति-दानकी बात समझानी चाहिये और जब कि प्राप्त जमीनके बंटवारेका समय आया है, संपत्ति-दानके बिना बंटवारेका काम सफल नहीं हो सकेगा, अिस बातकी तरफ दाताओंका ध्यान खींचना चाहिये।

(११) कूप-दान कुछ मिला है। अुस कामको और बढ़ावा देना है, अिसलिअे कहां-कहां कूप बनाने हैं, अिसकी योजना तैयार करना।

(१२) जगह-जगह छोटे-छोटे शिविर चलाना। शिविर तीन दिनसे ज्यादा लम्बे न हों। शिविरके बाद कार्यकर्ताओंको फौरन काम पर भेजना चाहिये। कार्यकर्ताओंको अुनकी शक्तिके अनुसार साहित्य बेचना, विचार-प्रचार करना, संदेश पहुंचाना, दान-पत्रोंका खाता-खसरा नंबर आदि पूर्ण करा लेना और दूसरे अितजाम आदि कअी कामोंमें लगा सकते हैं। भूमि-प्राप्तिका काम तो है ही।

(१३) सब थानोंमें खादी-केन्द्र शीघ्र शीघ्र स्थापित होने चाहिये। भूदान-यज्ञके प्रचारकी हम खादी-केन्द्रोंसे अपेक्षा नहीं करते। पर भूदान-यज्ञ और खादी-ग्राम-अुद्योग, दोनों अेक ही समग्र विचारके अंग हैं, अिसलिअे खादी-केन्द्र-योजनासे हमारे कामको सहज ही बल मिलेगा। खादीके साथ साहित्य-प्रचार गांववालोंमें सहज हो सकता है, और होना चाहिये।

(१४) महिलाओंकी शक्तिका विशेष अुपयोग होना चाहिये। महिलाओंकी शक्ति जगाना अेक स्वतंत्र कार्य ही है और भूदानके लिअे वह जरूरी भी है।

(१५) विद्यार्थियों और शिक्षकोंके जरिये विशेषतः साहित्य-प्रचारका काम हो सकता है। साहित्यके अध्ययनके लिअे अुनके अध्ययन-मंडल भी बनाये जा सकते हैं।

जनहितकारी आन्दोलनोंमें साहित्यिकोंका भी अपना अेक विशिष्ट स्थान होता है। अुनकी सहानुभूति और सहयोग प्राप्त करनेकी कोशिश की जाय। अुनकी प्रेरक रचनाओंको "भूदान-यज्ञ विहार" में अुचित स्थान मिल सकता है।

(१६) व्यापारी, वकील, डॉक्टर अित्यादि भिन्न-भिन्न वर्गोंमें प्रवेश करनेकी योजना होनी चाहिये।

(१७) भूदान-यज्ञमें जो शांतिमय क्रांतिका विचार निहित और अभिप्रेत है, अुसको समझकर किसी काममें अपना अधिकसे अधिक समय, चिंतन और ताकत लगानेका संकल्प करनेवाले सेवकोंकी अेक सेना तैयार करनी है। अिस तरहके जो भाअी होंगे, अुनसे हम बात करना चाहेंगे। अुनके लिअे शिक्षण-योजना भी करनी है।

(१८) कार्यकर्ताओंको किसीके पीछे किसीके दोषकी चर्चा या निंदा न करनेका व्रत ही लेना चाहिये। दफ्तरमें सारा कार्यक्रम सुव्यवस्थित होना चाहिये। पत्रोंका अुत्तर समय पर जाना चाहिये। रोज-ब-रोजका हिसाब पूर्ण करके ही रातमें निद्रा लेनी चाहिये। प्रार्थना यांत्रिक न हो। मंगल-प्रभात, गीता-प्रवचन, स्थित-प्रज्ञ-दर्शन, अीशावास्य अुपनिषद् अित्यादिका पठन-मनन कार्यकर्ताओंकी प्रार्थनाका अंग होना चाहिये।

ये मैंने थोड़ेमें अपने कुछ सुझाव पेश किये हैं। अिनकी पूर्तिमें व्यवस्थापकोंको और भी बहुत कुछ सूझ सकता है। वह सब कर लेना चाहिये। 'करेंगे या मरेंगे', यह संकल्प बापूने हमको सिखाया है। बापू तो वह पूर्ण करके चले गये। हमें वह करना बाकी है, यह ध्यानमें रखकर और सारे देशकी नजर अिस वक्त गया जिलेकी तरफ होगी, अिसका खयाल रखकर, हमें अपने सर्वस्वकी बाजी अिस कार्यमें लगानी है।

२५-१-'५४

विनोबा के
५-१०-५४

* गया जिलेमें प्रवेश करते समय किया हुआ निवेदन।

www.vinoba.in

जबरदस्त फर्क

प्रस्तावित पाक-अमेरिकन सैनिक सहायताके प्रचारक हमसे कहते हैं कि सैनिक और आर्थिक सहायतामें कोअी फर्क नहीं है। अिस विषय पर अमेरिकाके 'मनस' जैसे निष्पक्ष और गंभीरतापूर्वक विचार करनेवाले पत्रकी राय जानने योग्य है। 'म्युचुअल अेड' (आपसी सहायता) शीर्षकके अन्तर्गत अपने ४ नवम्बर १९५३ के अंकमें यह पत्र लिखता है:

"दूसरे देशोंको जो पैसा दिया जाय, अुसमें अिस बातका खयाल अवश्य करना होगा कि वह किस काममें लगाया जायगा; कामके फर्कके अनुसार दी जा रही मददके प्रकारमें बड़ा फर्क पड़ेगा। हम किसी शत्रु-देशके चारों तरफ फौजी घेरा खड़ा करना चाहते हैं और अिस अुद्देश्यसे किसी दूसरे देशको शस्त्रोंसे सुसज्जित करते हैं और अुसके लिअे पैसा खर्च करते हैं, यह अेक बात है; और अुसे संतुलित और स्वावलम्बी अर्थव्यवस्थाका निर्माण करनेमें पैसेकी मदद करते हैं, यह अुससे भिन्न बिलकुल दूसरी बात है। दोनोंमें फर्क तो करना ही चाहिये।

"अिसी तरह मौजूदा 'शीत युद्ध' में किसी देशका सहकार पानेके मतलबसे, लगभग रिश्वतके तौर पर अुसे पैसा देना या अुसकी जरूरतमें अुसे अन्न भेजना अेक चीज है और दूसरे देशोंके लोगोंको 'पाअिंट फोर' योजनाके अनुसार काम-काजकी वैज्ञानिक पद्धतियां सिखानेके लिअे अपने विशेषज्ञ भेजना और अिस तरह अुन्हें अुनके स्वावलम्बनके कार्यक्रममें मदद करना दूसरी बात है।

"हमें लगता है कि ये फर्क बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।"

अगर हम देखें कि युद्धकी तैयारीके सिलसिलेमें दुनियाकी साधन-सम्पत्तिकी लगातार कैसी बरबादी हो रही है तो अिस फर्कका महत्त्व स्पष्ट हो जाता है। 'मनस' का लेखक अपने विवेचनमें आगे कहता है:

"युद्धकी तैयारीके सिलसिलेमें अमेरिकाकी साधन-सम्पत्तिका लगातार जो व्यय हो रहा है, अुसके सम्बन्धमें यह विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि युद्धकी प्रवृत्ति पर खर्च हो रहे अिस धनका अेक सामान्य अंश यदि बिना शर्तवाली सहायताकी तरह अुन देशोंको दे दिया जाय जहां भूख और गरीबी मुख्य समस्या हैं, तो हम बहुत जल्द देखेंगे कि अितनी ज्यादा सैनिक तैयारीकी कोअी आवश्यकता नहीं है। यह खयाल नया नहीं है; पिछले तीन-चार सालसे अुसे कितने ही विचारशील व्यक्ति दुहरा चुके हैं।"

दुनियामें शांतिकी स्थापनाके लिअे अिसी तरहकी आन्तर-राष्ट्रीय सहायताकी योजना करनेकी आवश्यकता है। आजकी दुनियामें युद्धकी तरह शांतिके लिअे भी सम्पूर्ण प्रयत्न होना चाहिये, तथा गरीबी, भूख और रोगके खिलाफ विश्वव्यापी प्रमाण पर सुरक्षाकी व्यवस्था होनी चाहिये। मौजूदा सत्ताकांक्षी गुट शस्त्रशक्तिके जरिये शांति कायम रखनेकी कोशिश कर रहे हैं और अिस कोशिशमें लगातार अपनी युद्ध करनेकी ताकत बढ़ाते जा रहे हैं; भारत ही अेक देश है जो शांतिके लिअे सामूहिक अुद्योगके पक्षमें है और अिस तरह दुनियाकी शांतिका निर्माण करनेकी ताकत बढ़ा रहा है। जाहिर है कि लेखके शुरूमें जिन दो प्रकारकी सहायताओंकी चर्चा हुअी है, अुनमें अुतना ही जबरदस्त फर्क है जितना युद्ध और शांतिमें।

१३-२-'५४ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद - ९

माध्यमिक शिक्षामें बुनियादी सुधार

केन्द्रीय शिक्षा-मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजादने शिक्षा-विभागकी केन्द्रीय सलाहकार समितिकी २१ वीं बैठकमें भाषण करते हुअे कहा कि शिक्षाके दो क्षेत्रोंमें सुधार करना अत्यन्त जरूरी हो गया है — पहला क्षेत्र विश्वविद्यालयकी शिक्षाका और दूसरा स्कूली शिक्षाका।

माध्यमिक शिक्षा पर विचार प्रगट करते हुअे मौलाना आजादने कहा कि जब तक अुसका पुनर्गठन नहीं किया जाता, तब तक वह देशकी जरूरतोंको पूरा नहीं कर सकती। अुन्होंने कहा, "अिस सिलसिलेमें मुझे तीन बातें बहुत महत्त्वकी मालूम होती हैं:

१. माध्यमिक शिक्षाकी रचना अैसी होनी चाहिये कि अधिकांश लोगोंके लिअे वह पूरी शिक्षाका काम दे। वह विश्वविद्यालयकी प्रवेशिक भूमिका न होकर अपने आपमें शिक्षाकी अेक पूरी अिकाअी होना चाहिये।

२. अुसकी पाठ्य-वस्तु और अुसका आकार-प्रकार अैसा होना चाहिये कि वह विभिन्न योग्यतावाले लोगोंके विभिन्न वर्गोंकी जरूरतें पूरी कर सके। अुसे किसी सख्त सांचेमें नहीं ढाला जाना चाहिये।

३. प्रारम्भिक अवस्थाके लिअे हमने बुनियादी शिक्षाको आदर्श शिक्षा-पद्धति माना है। माध्यमिक शिक्षाकी योजना अैसी होनी चाहिये कि वह प्राथमिक अवस्थामें शुरू की गयी शिक्षाको ही और बढ़ाकर पूरा कर दे और अैसे नागरिक तैयार करे, जो नागरिकके नाते अपनी तमाम जिम्मेदारियोंको बखूबी अंजाम दे सकें। माध्यमिक शिक्षा-कमीशनकी रिपोर्टमें किसी अेक दस्तकारीकी तालीम पर जो जोर दिया गया है, वह मुझे अिस दृष्टिसे मूल्यवान मालूम होता है।"

सलाहकार बोर्डने माध्यमिक शिक्षा-कमीशनकी सिफारिशों पर विचार करनेके लिअे जो कमेटी नियुक्त की थी, अुसकी अेक मुख्य सिफारिश यह है कि हमारे देशमें शिक्षाकी रचनाका अंतिम स्वरूप अिस प्रकारका होना चाहिये: आठ वर्षकी सुसमन्वित प्राथमिक (बुनियादी) शिक्षा, चार वर्षकी माध्यमिक शिक्षा, और तीन वर्षकी विश्वविद्यालयकी शिक्षा।

कमेटीने कमीशनकी अिस सिफारिश पर विशेष ध्यान आकर्षित किया है कि माध्यमिक शिक्षामें भाषायें, सामान्य विज्ञान, विविध समाज-विज्ञान और अेक दस्तकारी, ये पाठ्यक्रमके आधारभूत विषय होने चाहिये और सबको पढ़ाये जाने चाहिये। अिसके सिवा कमेटीने साहित्य, विज्ञान, यंत्र-विज्ञान, वाणिज्य, कृषिविद्या, ललित कला और गृहविज्ञान आदि विषयोंमें विविधतापूर्ण पाठ्यक्रम दाखिल करने पर बहुत ज्यादा जोर दिया है।

मौलाना आजादने कहा कि "समितिने अपनी रिपोर्टमें यह सूचना भी की है कि माध्यमिक शिक्षणके अन्तमें अेक परीक्षा होना चाहिये, लेकिन अुसके साथ सामयिक परीक्षाओं और अभ्यासक्रमसे सम्बन्धित या दूसरी सहकारी प्रवृत्तियोंमें विद्यार्थियोंकी प्रगतिकी नियमित रिपोर्टों पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिये।"

अुन्होंने यह भी कहा, "अगर हम ये सिफारिशें स्वीकार करें — और मैं आशा करता हूं कि आप अुन्हें स्वीकार करेंगे — तो फिर हमें कुछ निर्दिष्ट लक्ष्य निश्चित कर लेना चाहिये। मेरा अपना विचार यह है कि यह काम दस वर्षके अन्दर पूरा हो जाना चाहिये। मैं कबूल करता हूं कि दस वर्षका समय भी बहुत ज्यादा मालूम होता है और अगर वह और कम किया जा सके तो मुझे खुशी होगी।"

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२७ फरवरी १९५४

भूदानमें अगला कदम

श्री विनोबाने गया जिलेमें चौथी बार प्रवेश करनेके वक्त वहांके कार्यकर्ताओंके लिअे ब्यौरेवार सूचनायें निकाली हैं, जो अन्यत्र दी गअी हैं। अिनमें अुन्होंने अन्तमें कहा है कि, "सारे देशकी नजर अिस वक्त गया जिलेकी तरफ होगी, अिसका खयाल रखकर हमें अपने सर्वस्वकी बाजी अिस कार्यमें लगानी है।" और अुसमें कहा है, "करेंगे या मरेंगे — यह संकल्प बापूने हमको सिखाया है। बापू तो वह पूर्ण करके चले गये। हमें अुसे करना बाकी है।"

सारी बातका मतलब यही है कि भूदानके काममें अब अेक नया कदम अुठाना और कामको आगे बढ़ाना जरूरी हो गया है। श्री विनोबाकी सूचनायें अिस दृष्टिसे अपना खास महत्त्व रखती हैं।

सूचनाओंमें से अेककी तरफ मैं खास ध्यान दिलाना चाहता हूं, क्योंकि वह बड़ी अर्थपूर्ण और अहम बात है। अितने साफ शब्दोंमें शायद श्री विनोबाने अुसे पहले नहीं रखा था। वह है भूदान-यज्ञमें ग्रामोद्योग और खादी-गृह-अुद्योगों वगैराका स्थान। सूचना यह है:

> "सब थानोंमें खादी-केन्द्र शीघ्र-शीघ्र स्थापित होने चाहियें। भूदान-यज्ञके प्रचारकी हम खादी-केन्द्रोंसे अपेक्षा नहीं करते। पर भूदान-यज्ञ और खादी-ग्राम-अुद्योग, दोनों ही समग्र विचारके अंग हैं, अिसलिअे खादी-केन्द्र-योजनासे हमारे कामको सहज ही बल मिलेगा। खादीके साथ साहित्य-प्रचार गांववालोंमें सहज हो सकता है, और होना चाहिये।"

मेरे पास बिहारसे अेक राष्ट्रप्रेमी भाअीके पत्र आया करते हैं। वे अिस प्रश्नके बारेमें बड़ी कड़ी आलोचना करते हुअे कहते हैं कि चरखेके बदले भूदानको अहिंसा और अुन्नतिका प्रतीक बताना सरासर गलत है। "जमीन जड़ है, जमीन पर काम करनेकी कला चेतन है; अुसमें विकास है।... जब मशीनके द्वारा हमारी ताकत छीन ली जाती है, तो देशमें और विश्वमें संघर्ष और विषमता अुत्पन्न होनेका कारण अपने आप बनता जाता है। बापूने अिस मर्मको समझा और अेक वाक्यमें कहा — चरखा अहिंसाका प्रतीक है।"

श्री विनोबा अिस बातसे अिन्कार नहीं करते। हमें समझना होगा कि अहिंसासे यदि आर्थिक क्रांति करना है, तो अुसके मानी हैं स्वावलम्बन। अुसके दो अर्थ हो सकते हैं — १. न केवल सरकारकी कानूनी शक्तिके आधार पर, परन्तु अपनी प्रजाकीय शक्ति पर आधार रखकर यह काम और अुसकी पद्धति होनी चाहिये। तब प्रजाकीय सरकार सफलतापूर्वक मदद कर सकेगी। २. यही नियम हरअेक व्यक्तिको भी लागू होना चाहिये। अिसका मतलब यह कि सारा समाज करे तभी होगा अैसा नहीं, परन्तु यदि कोअी व्यक्ति भी चाहे तो अिसे सिद्ध करके अपने जीवनमें आर्थिक क्रांति कर सकता है।

स्वावलम्बी यानी अहिंसक क्रांतिका यह कायदा है। खादीका दृष्टांत लीजिये। सारे देशके लोग खादी अपना लें, तो देशभरमें बड़ी भारी क्रांति होगी। कल-कारखानोंके काम पर भी अुसका गहरा असर पहुंचेगा। देशके धनके या 'नाणाकीय' बन्दोबस्त पर भी अिसका असर होगा। और यदि कोअी व्यक्ति भी खादी अपना ले, यानी खुद काते और अपना कपड़ा तैयार कर ले या करा ले, तो वह भी अिस तरीकेसे अपना स्वावलम्बन कर लेगा।

अिस दृष्टिसे भूदानकी पद्धतिका विचार करें तो सिर्फ जमीन मांगना और अुसको बेजमीनोंमें बांटना, यह पूरा या स्वावलम्बी तरीका नहीं माना जायगा। अिसीलिअे समाजवादी विचारवाले मित्रोंमें जमीन पानेके लिअे 'खेड़ सत्याग्रह' जैसा आन्दोलन करना जरूरी समझा जाता है। जमीनवालेसे जमीन पानेका परावलंबन अिस तरह व्यक्त होता है। अितने अंशमें यह तरीका आर्थिक क्रांतिके लिअे अधूरा-सा माना जायगा।

परन्तु भूदान-यज्ञका अुद्देश्य अितना ही नहीं है। बेजमीनोंको जमीन मिलना, यह तो अुसका प्रारम्भ ही है। जमीनसे काम लेना है तो अुसके लिअे साधन चाहियें। ये साधन बेजमीन लोग अपनी शक्तिसे पैदा कर सकेंगे?

बेजमीनोंके पास जमीन ठीक ढंगसे और अच्छी तरहसे जोतनेके लिअे जो वृत्ति और लगन चाहिये वह तो होनी ही चाहिये। परन्तु जरूरी धनका क्या होगा? यहां पर संपत्तिदान बताया जाता है। यह भी दूसरों पर अवलंबित है। सवाल यह है कि किसान खुद क्या करेगा? आज वह क्या कर सकता है? गांधीजीका मंत्र यहां पर आता है। अुसीसे वह क्रांतिकारी मार्ग माना जाता है।

यह मार्ग हमको बताता है कि आत्मशुद्धि और रचनाकार्य हमें मदद दे सकते हैं। अिसके लिअे भी संगठित प्रयत्न होना चाहिये। यह हम आज और अभी शुरू कर सकते हैं। और जितना भी किया जाय अुतना भला और फायदेमंद ही होगा। यह प्रयत्न है खादी और ग्रामोद्योग तथा स्वदेशीधर्म। अिनसे हम खुद ही कुछ कर सकते हैं। दूसरोंके दानकी तरफ ताकते हुअे बैठे रहनेकी जरूरत नहीं है। अैसा होगा तो दूसरोंकी मदद अपने आप मिलने लगेगी और वह कामयाब भी हो सकेगी।

हमारे कार्यकर्ताओंको अब यह बात स्पष्ट होनी चाहिये। भूदानकी जमीनको अब बांटना है। जिसे जमीन मिलेगी, अुसे अुस पर कायम रहनेकी ताकत बतानी है। ५ अेकड़ जमीनसे वह अपना गुजारा तभी चला सकता है, जब वह अपना फालतू समय खादीके अर्थशास्त्रके न्यायसे चलकर काममें लेगा। यह हमारा दूसरा और सबसे बड़ा क्रांतिकारी कदम है, जो अब हमें अुठाना है।

१९-२-'५४ मगनभाई देसाई

स्वागत

शराबबन्दीका प्रचार करनेवाली अखिल भारतीय संस्था नेशनल टेम्परेन्स सोसाअिटी ऑफ अिंडियाकी ओरसे 'अेलर्ट' नामक अेक पत्रका प्रकाशन शुरू हुआ है। अुसका १९५४का प्रारम्भिक अंक हमारे सामने है। मैं अुसका स्वागत करता हूं। शराबबन्दीके महान कार्यकी सेवा करनेवाले अेक अखिल भारतीय पत्रका प्रकाशन हो रहा है, यह बहुत अच्छी बात है।

अिस संस्थाके ध्येयके विषयमें किसीको कोअी भ्रम न हो, अिसलिअे मैं यहां अुसकी 'टेम्परेन्स' शब्दकी व्याख्या देता हूं — "सच्चे टेम्परेन्सका अर्थ यह है कि मादक तत्त्व रखनेवाले सारे पेयोंका पूरा त्याग किया जाय।" अिस तरह 'टेम्परेन्स' का अर्थ है पूर्ण शराबबन्दी।

श्री राजगोपालाचारी अपने 'युवकोंको संदेश' नामक लेखमें कहते हैं:—

> "मैं शराबका विरोध अकारण नहीं करता। मैं शरीर और मनको निर्मल और पवित्र तथा कार्यक्षम बनाये रखनेमें विश्वास करता हूं। शराब किसी भी मात्रामें ली जाय, वह दिमागकी नाजुक क्रिया-प्रणालीको अस्त-व्यस्त कर देती है, और अगर वह लगातार ली जाय तो शरीरको नुकसान पहुंचाती है। नशेका मन और शरीर पर जो प्रभाव होता है, पीनेवालेको अुसका चस्का लग जाता है। अन्तमें मनुष्यका अिच्छा-स्वातंत्र्य बिलकुल खतम हो जाता है, और संतुलन और संयोजनकी वह क्रिया जो मनुष्यके मनकी अत्यन्त बहुमूल्य शक्ति है नष्ट हो जाती है। वह शारीरिक स्वास्थ्य चौपट कर देती है और परिवारमें अनबन और दुःखका कारण सिद्ध होती है। वह बुढ़ापेकी लाचारीको भी बढ़ाती है। मैं शराबका विरोध अपनी परहेज-प्रियताके कारण करता हूं, अैसी बात नहीं है। मैं अुसके नुकसानोंके कारण ही युवकोंसे यह आग्रह करता हूं कि वे शराब आदि मादक पेयोंसे अुसी प्रकार बचें, जिस तरह कि सामाजिक व्यवहारमें हम ठगों और चोरोंसे बचते हैं।"

(अंग्रेजीसे) १३-२-'५४ म० प्र०

www.vinoba.in

श्री महादेव देसाओी स्मारक ट्रस्ट सम्मेलन

[१५ अगस्त, १९४२ को श्री महादेवभाओी देसाओीका अवसान हुआ। अुनकी स्मृतिमें गुजरातके कार्यकर्ताओंने अेक कोष अिकट्ठा करके श्री महादेव स्मारक ट्रस्टकी स्थापना की। अिस बातको आज ७ बरस हो गये।

ट्रस्टके आश्रयमें काम करनेवाले सेवकोंका दूसरा सम्मेलन ता० ८–१–'५४ को गूजरात विद्यापीठमें श्री मोरारजी देसाओीकी अध्यक्षतामें हुआ। अुसकी रिपोर्ट तथा वार्षिक हिसाब ट्रस्टके मंत्रीकी ओरसे मिला है, जो नीचे दिया जाता है। —म० प्र०]

१. मंत्रीका निवेदन

आरम्भमें प्रार्थनाके बाद सम्मेलनके मंत्रीने नीचेका निवेदन किया:

आज हम जिस रूपमें मिल रहे हैं, अुस तरह पहले-पहल १९४९ में मिले थे। अुसके बादके वर्षोंमें मिलना संभव नहीं था। अिस वर्ष अैसा सुयोग मिला, अिससे बड़ा आनन्द होता है। अिस अवसर पर में सबका स्वागत करता हूं।

यह विचार में सबके सामने रखता हूं कि हर साल अिस तरह सम्मेलन करनेकी अिच्छासे अगर कोओी अमुक दिन निश्चित करनेकी योजना हम बनायें तो कैसा रहे।

जैसा कि मैंने पिछले सम्मेलनमें कहा था, महादेव ट्रस्टके मुख्यतः दो काम हैं:

१. गुजरातमें सेवक महादेव ट्रस्टकी तरफसे अपने-अपने रचनात्मक कार्य करते हैं;

२. गुजरातको नये सेवक मिलते रहें, अिस दृष्टिसे विद्यापीठ द्वारा समाजसेवा महाविद्यालय चलाया जाता है।

पहले कामकी नीति यह रही है कि सेवक अपनी पसन्दके क्षेत्रमें रहकर रचनाकार्य करते हैं। ट्रस्ट सेवकोंको निर्वाह-खर्च देता है। सेवकोंसे यह अपेक्षा रखी जाती है कि वे अपने कामकी डायरी भेजें और अपने कामकी सामान्य जानकारी मंत्रियोंको देते रहें। नियमित कताओी-यज्ञ हर सेवकका फर्ज माना जाता है।

अिस तरह वेतन लेकर काम करनेवाले सेवकोंकी संख्या आज २० और बिना वेतन लिये काम करनेवाले सेवकोंकी संख्या ११ यानी कुल ३१ है। अुन्होंने ट्रस्टकी मर्यादा स्वीकार की है।

जंबुसरके श्री धूलाभाओी मिस्त्रीका ५५ वर्षकी अुमरमें ता० २७–११–'५३ को अवसान हो गया, जिसके लिअे हमें बड़ा दुःख है। वे भड़ौंच जिलेके अेक पुराने सेवक थे।

अूपरके २० सेवकोंके लिअे वार्षिक खर्च लगभग २५ हजारका होता है।

समाजसेवा महाविद्यालयका दूसरा काम गूजरात विद्यापीठमें चलता है। सम्मेलनके निमित्तसे सब सेवक विद्यापीठमें ही मिल रहे हैं, अिसलिअे अुन्हें अिस कामकी जानकारी आसानीसे मिल सकेगी। मार्च १९५३ तक महाविद्यालयसे पास होकर कुल ३३ स्नातक निकले हैं। अुनमें से २९ स्नातक अलग-अलग सेवाकार्योंमें लग गये हैं।

अिन २९ में से दो भाओी वेतन लेकर ट्रस्टके पास काम करते हैं। दूसरे सब विभिन्न सेवाकार्य कर रहे हैं। यह खुशीकी बात है कि महाविद्यालयके स्नातकोंके लिअे सेवासंस्थाओंकी ओरसे मांग होती ही रहती है।

ये स्नातक सेवक तथा अूपर बताये हुअे वैतनिक और अवैतनिक सेवक मिल कर कुल साठेक भाओी-बहन आज गुजरातके विविध सेवाक्षेत्रोंमें काम कर रहे हैं। कहा जा सकता है कि वे अेकसा आदर्श और सिद्धान्त अपने सामने रखकर काम करते हैं। ये सिद्धान्त और आदर्श गांधीजीने हमें बताये हैं। अैसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ट्रस्टका मुख्य अुद्देश्य गांधीजीकी बताओी हुओी सेवाप्रणाली गुजरातमें खड़ी करना है। गुजरातमें अगर रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा लोकजीवनके निर्माणका काम जारी रखना हो तो अितना तो हमें करना ही चाहिये। यह प्रवृत्ति दिनोंदिन बढ़े और मजबूत बने, यह देखना हम सब सेवकोंका फर्ज है। अिस तरहके सम्मेलनोंसे यह बल हम पैदा कर सकते हैं। ट्रस्टकी यह धारणा है कि हरअेक सेवक अपने-अपने सेवाक्षेत्रमें अेक छोटी संस्थाका रूप लेकर अपने आसपास सेवाका वातावरण जमावेगा, अुसके लिअे जरूरी मदद खुद हासिल करेगा, लोगोंका सहयोग प्राप्त करेगा और स्थानीय सेवकोंकी मदद भी लेनेकी कोशिश करेगा। मेरी प्रार्थना है कि आप अिन बातों पर सम्मेलनमें विचार करें।

२. अध्यक्षका भाषण

अध्यक्षपदसे भाषण करते हुअे श्री मोरारजी देसाओीने कहा:

आज पांच सालके बाद हम दूसरी बार मिल रहे हैं। जैसा कि मंत्रीजीने बताया, हम हर साल अगर अिस तरह मिल सकें तो बड़ी अच्छी बात होगी। अिसके अनेक लाभ हैं। सम्मेलन हो तो अपने-अपने स्वतंत्र क्षेत्रमें काम करनेवाले सेवक, समान आदर्शमें श्रद्धा रखकर स्वतंत्र रूपसे काम करनेवाले दूसरे सेवकोंसे मिलकर अपने कामकाजके बारेमें आवश्यक चर्चा कर सकते हैं और अपने-अपने अनुभवोंका आदान-प्रदान कर सकते हैं। अैसा करना बहुत जरूरी है। अिससे हमारी शक्ति बढ़ेगी और अेक-दूसरेके सहारे और सहयोगसे काम भी ज्यादा होगा।

श्री महादेव देसाओी स्मारक ट्रस्टकी स्थापनाके पहले जब स्मारक कोष अिकट्ठा हुआ तभी अिस स्मारकके रूपके बारेमें विचार कर लिया गया था। महादेवभाओीका जीवन ही अुनका सच्चा स्मारक है। अुनका स्मारक हम कायम करते हैं, अिसका अर्थ यही है कि अुन्होंने अपने जीवनमें जिन सिद्धान्तोंको अुतार कर अपना जीवन सार्थक किया और देशकी बड़ी भारी सेवा की, अुन्हें हम सब भी अपने जीवनमें अपनावें और किसी न किसी दिशामें अपनी शक्तिके अनुसार सेवाकार्य करें। हम अैसा करेंगे तो ही स्मारकके सच्चे हेतुका पालन हुआ कहा जायगा।

कुछ लोग पूछते हैं कि अब स्वराज्य मिलनेके बाद भी क्या लोकसेवा करनेवाली संस्थाओंकी जरूरत है? हमारे मनमें अैसी शंका अुठनेका कोओी कारण नहीं है। हमें अिसकी चर्चा और वादविवादमें पड़नेकी भी जरूरत नहीं है। लेकिन अेक दो बातों पर में यहां आपका ध्यान खींचना चाहता हूं।

हमें लोकशाहीके सिद्धान्तों पर अपना राज्य चलाना है। हम जिस विचारधारा और जीवन-दृष्टिमें श्रद्धा रखते हैं, वह गांधीजीकी दी हुओी है। अिसमें कोओी शक नहीं कि अुसके अनुसार समाज और राज्य-व्यवस्था चल सकती है। लेकिन यह विचारधारा बापूने अपने जीवनके द्वारा हमारे सामने रखी और हमने अिसे अुनसे समझनेका प्रयत्न किया। यदि हम अुसे जीवित रखना चाहते हैं और हमारी यह अभिलाषा हो कि अुसके अनुसार समाज-व्यवस्था रची जाय और राज्य चले, तो अुसके लिअे केवल राज्यबल अुपयोगी नहीं होगा। क्योंकि राज्यबल जिस ढंगसे काम करता है, अुसकी हमेशा अेक मर्यादा होती है। अिसके लिअे समाजमें अैसे सेवकोंका काम करना भी जरूरी है, जिनका राज्यसत्तासे कोओी सम्बन्ध न हो, जिन्हें राज्यसत्ता पानेका कोओी लोभ न हो, — अुस तरफ जिनका लक्ष्य ही न हो, और जो राज्यकी सत्ताके बल पर काम न करना चाहें। अैसे सेवक लोगोंके चरित्रको गढ़कर अुन्हें स्वाश्रयी और स्वावलम्बी बनानेका प्रयत्न करें। खुद साहसी बनकर लोगोंको सच्ची जीवनदृष्टि दें। राज्य चलानेवाले और ये सेवक अेक-दूसरेका सम्पर्क साध कर काम करें, तो ही बापूने हमें लोकशाहीका

www.vinoba.in

जो आदर्श और जीवन-दृष्टि दी है, अुसके अनुसार हम समाजकी रचना कर सकेंगे और राज्य-व्यवस्थाको अुस दिशामें अधिकाधिक ले जा सकेंगे।

श्री म० दे० ट्रस्टका हेतु अैसे लोकसेवक तैयार करना और अुन्हें ट्रस्टके फंडसे बन सके अुतनी मदद देना है।

सेवक कोअी न कोअी सेवाका काम करते हैं। अिसके साथ अुन्हें अपनी जीवन-शुद्धि करनेका भी ध्यान रखना चाहिये। क्योंकि हम जितने भी शुद्ध बनेंगे, अुतनी ही लोगोंकी अच्छी सेवा कर सकेंगे। बापूने जो मार्मिक बात कही वह यह है कि हमारे विचारों, वाणी और व्यवहारमें कोअी फर्क नहीं होना चाहिये। अगर हमें सत्यका दर्शन करना है, सत्य और अहिंसामें हमारी श्रद्धा है, तो हमारे विचार, वाणी और व्यवहार अलग-अलग नहीं होने चाहियें। सत्यकी चिन्ता न रखेंगे, तो जो सेवा हम करना चाहते हैं, वह नहीं कर सकेंगे।

बापूने हमें अपने जीवनसे यह बात सिखाअी है कि जो काम हम खुद न करते हों और करनेके लिअे तैयार न हों, वह दूसरोंसे करनेके लिअे नहीं कहना चाहिये। बापूने अैसी बात कभी नहीं कही, जिसका अुन्होंने खुद प्रयोग न किया हो और जिसे अुन्होंने अपने जीवनमें अपनाया न हो। अिसलिअे दुनियामें किसी अेक व्यक्तिका नहीं हो पाया, अुतना असर अुनका हुआ है।

यहां मिलनेसे पहले सुबह सारे सेवकोंके साथ जो बातचीत हुअी, अुसमें अेक भाअीने मुझसे कहा कि 'कभी-कभी हमसे पूछा जाता है कि तुम ट्रस्टके सेवक तो कांग्रेसका काम करते हो; अिस कामका मेल ट्रस्टके कामके साथ कैसे बैठ सकता है?' किसी सेवकको मुझसे यह सवाल पूछना पड़े यह दुःखकी बात है। मैंने अुनसे कहा, बापूने अपने जीवन-सन्देशके लिअे कांग्रेसको पसन्द किया। कांग्रेसको वैसा ही स्वरूप देनेकी अुन्होंने कोशिश की। कांग्रेसने बापूके आदर्श अपनाये। गांधीजीके आदर्शोंको फैलानेवाली दूसरी अैसी कोअी सक्रिय संस्था नहीं है। यह सच है कि यह संस्था निर्दोष नहीं है। हरअेक कृतिमें दोष होता है। लेकिन मनुष्यकी कोशिश अपनी कृतिको ज्यादासे ज्यादा निर्दोष बनानेकी होनी चाहिये। कांग्रेस आज अैसी ही संस्था है। दूसरी कोअी अैसी संस्था नहीं, जो अपने ही आदमियोंके दोष निकाले। अिसके अलावा, अिस ट्रस्टकी स्थापना करने और चलानेवाले कांग्रेसी हैं। ट्रस्टके सेवक कांग्रेसका काम करें, अिसमें गलत क्या है? जिस दिन कांग्रेस गांधीजीके आदर्शोंको छोड़ेगी, अुस दिन ट्रस्टके सेवक अुसका विरोध करेंगे। लेकिन आज जब कांग्रेस बापूके आदर्शोंको मूर्तरूप देनेका प्रयत्न कर रही है, तब अुसे मदद देना ट्रस्टके सेवकोंका धर्म हो जाता है। वे कांग्रेसका काम करें, अिसमें शंकाकी कोअी गुंजाअिश नहीं है।

दूसरी अेक बात और मैं यहां कहना चाहता हूं। ट्रस्ट ज्यादा फंड अिकट्ठा नहीं करता। आजकी हालतमें ट्रस्टके फंडको बढ़ानेमें काफी मेहनत पड़ेगी। अिसलिअे फंडको बढ़ानेका विचार हमने नहीं किया। फिर भी हमारा काम तो दुनिया जिन्दी है, तब तक चलना ही चाहिये। लोगोंमें मानवता पैदा करने और बढ़ानेका काम कभी पूरा नहीं होगा। अिसलिअे अैसी व्यवस्था करना जरूरी है, जिससे ज्यादा आदमी लोकसेवकोंका काम करें, अिस दृष्टिसे विचार करने लगें और अुन्हें सेवाके साधन मिलते रहें। अिसलिअे अिस विषयमें सेवकोंको विचार करना चाहिये। सेवक जहां अपना काम करते हों, वहां वे आर्थिक दृष्टिसे यथासंभव स्वतंत्र बननेका विचार करें तो ठीक होगा। अिससे अुनकी शक्ति बढ़ेगी और ट्रस्टको आर्थिक दृष्टिसे मजबूत बनानेमें मदद मिलेगी। वर्ना ट्रस्टकी प्रवृत्तियोंका विकास करना कठिन होगा।

हम अगर आर्थिक दृष्टिसे स्वावलम्बी बननेका विचार करेंगे, तो अपने कामको वेगवान बना सकेंगे। जिन लोगोंकी सेवा हम करते हैं, अुनका प्रेम-सम्पादन अगर हम न कर सकें, अुन्हें अपने धर्मकी प्रतीति न करा सकें और अुनमें हमारा बोझ अुठानेकी प्रेरणा न पैदा कर सकें, तो यह हमारी सेवामें अेक कमी मानी जायगी। यह हमारी सेवाकी सफलताका माप कहा जा सकता है। अिस विषयमें आप सब जैसा अुचित मालूम हो विचार करें; अगले साल जब हम मिलेंगे, तब अिस पर सक्रिय रूपसे विचार करना होगा।

ट्रस्टकी ओरसे अेक विद्यालय चलता है। अुसमें से जो स्नातक निकलते हैं, अुनसे अिस तरहके कामकी अपेक्षा रखी जाती है। यह जानकर सन्तोष हुआ कि जो स्नातक महाविद्यालयसे निकले, अुन सबको ट्रस्टकी ओरसे वेतन लेनेकी जरूरत नहीं पड़ी। दोको छोड़कर बाकी सब सेवक स्वतंत्र रूपसे सेवाकार्यमें लगे हैं और अुन्हें मदद मिली है। अधिक स्नातक निकलें और ट्रस्टके अवैतनिक सेवक बनें, तो मेरा विश्वास है कि सेवकोंका अेक मजबूत संघ अवश्य खड़ा हो जायगा।

दूसरे अेक भाअीने सवाल पूछा: 'हम जो काम करें, अुसके परिणामका विचार करना चाहिये या नहीं?' अिस शंकामें कुछ विचार-भ्रम है। परिणामकी चिन्ता न करना और परिणामका विचार न करना अिन दोमें फर्क है। हमारे काम निष्काम होने चाहिये, अिसमें कोअी शक नहीं। लेकिन अभी हम निष्काम नहीं हो पाये हैं। कब होंगे, कहना कठिन है। लेकिन निष्काम बननेका प्रयत्न अवश्य करना चाहिये। परिणामका विचार किये बिना काम किया जाय, तो वह अव्यवस्थित, अर्थहीन और कभी-कभी गड़बड़ पैदा करनेवाला साबित होता है। अिसलिअे परिणामका विचार तो करना ही चाहिये। सेवा भी किसी हेतुसे ही हम करते हैं। दूसरोंके लिअे अुपयोगी बननेके विचारसे ही हम सेवाकार्यमें लगे हैं। अिसलिअे यह विचार तो हमें करना ही होगा कि हम जो काम करते हैं, अुसके जरिये हम दूसरोंके लिअे अुपयोगी सिद्ध हो सकेंगे या नहीं। यह भी खयाल रखना होगा कि जो कुछ हम करते हैं वह किसलिअे करते हैं। हमारे कामका परिणाम शुभ होना चाहिये और अुसे प्राप्त करनेका रास्ता सत्यका होना चाहिये। यह ठीक है कि जिस परिणामके लिअे हम काम करते हैं, अुसकी चिन्ता न करें। लेकिन सोचा हुआ परिणाम न आये तो हमें यह विचार अवश्य करना चाहिये कि अिसमें हमारा दोष कहां और कितना है। हमारी कार्यपद्धति ठीक है या नहीं, अिसका विचार करना चाहिये। अिसकी चिन्ता तो रखनी ही चाहिये कि हमारी काम करनेकी रीतिमें कहीं दोष न पैदा हो। परिणामकी चिन्ता न करना संयम कहा जायगा। वर्ना हम लोभी बन सकते हैं; किसी गलत रास्ते चढ़ जानेका डर भी अिसमें रहता है।

आदर्श सबके अूंचे ही रहते हैं। किसीका आदर्श नीचा है, अैसा नहीं कहा जा सकता। लेकिन अुलटे रास्ते चलनेसे अुस आदर्श तक नहीं पहुंचा जा सकता। अिसमें दृष्टिभेद और वृत्तिभेद रहते हैं। परिणामके लोभके कारण लोग चाहे जैसे साधन अपना लेते हैं। साम्यवादी कहते हैं कि हमारा काम कैसे भी साधनोंसे चल सकता है। अिस हद तक वे प्रामाणिक हैं। धर्ममें श्रद्धा रखनेवाले लोग भी सत्यके मार्ग पर चलते हुअे खतरा पैदा होने पर सत्यको छोड़ देते हैं और असत्यका सहारा लेते हैं। और कारण यह देते हैं कि दूसरा कोअी अिलाज ही नहीं था। अैसे समय वे अपनी सत्यनिष्ठाको छोड़ देते हैं। अिसलिअे हमें हमेशा आत्मनिरीक्षण करते रहना चाहिये। साधनकी शुद्धिका हमारा आग्रह कभी शिथिल नहीं पड़ना चाहिये।

www.vinoba.in

काम करते हुअे रास्तेमें लोभ और पतनके स्थान आते ही हैं। लोग हमारी तारीफ करें, अिससे अगर हम यह मानने लगें कि हम अच्छे हैं, तो हम अवश्य गिरेंगे। हमें अिस बारेमें सदा जाग्रत रहना चाहिये कि हममें यह अभिमान न पैठने पाये कि हम दूसरोंसे ज्यादा शुद्ध और पवित्र हैं। मनुष्य जब तक अीश्वर-दर्शन नहीं करता, तब तक अुसमें अशुद्धि रहती ही है। यह बात अलग है कि किसीमें ५ प्रतिशत रहती होगी तो किसीमें ५० प्रतिशत। अिसलिअे हमें अपने दोष हमेशा देखते रहना चाहिये। हमारे व्यवहारमें दूसरेके प्रति तिरस्कारकी भावना नहीं होनी चाहिये। शत्रुको भी मदद करनेकी जरूरत आ पड़े, तो खुशीसे अुसकी मदद करना चाहिये। अुस वक्त हमारे मनमें अिस बातका विचार भी नहीं अुठना चाहिये कि अुसने हमें अमुक नुकसान पहुंचाया था।

अिस तरह हम काम करेंगे, तो हाथमें लिये हुअे अपने कामको चमकायेंगे और देशके निर्माणमें योग्य हिस्सा लेंगे। यह काम अगर हम सतत जाग्रत रहकर करेंगे, ध्येयनिष्ठासे और निःस्वार्थ भावसे करेंगे, तो हमारे काममें ताकत आये बिना नहीं रहेगी। अिसमें जो बाधायें आती हों, अुन्हें दूर करनेके सम्बन्धमें जरूरी चर्चा करनेके लिअे हमारा सम्मेलन हो, यह अुपयोगी और अुचित माना जायगा। हम अेक-दूसरेको रास्ता बतानेवाले हैं। अिसी तरह हम ज्यादा शुद्ध बन सकेंगे और बापूके आदर्श तक पहुंच सकेंगे।

(गुजरातीसे)

श्री महादेव देसाअी स्मारक ट्रस्टका ३१ दिसम्बर, १९५३ के दिन पूरे हुअे वर्षके आय-व्ययका हिसाब

जमा रु० आ० पा०		नामे रु० आ० पा०	
३०,४४९-५-०	चालू वर्षमें हुअी ब्याजकी आयके	२४,४२५-०-०	श्री सेवक मदद खाते अुधार
२७,१०७-१३-९	चालू वर्षमें खर्चमें बढ़ती	१८,७१४-७-९	श्री गूजरात विद्यापीठको: श्री आचार्य, म० दे० समाजसेवा महाविद्यालयके ता० ३१-३-'५३ के वर्षके घाटेके — श्री गूजरात विद्यापीठका हिसाब जांचनेवाले ऑडिटरके हिसाबके मुताबिक
		१२,६०७-८-०	श्री छात्रवृत्ति और सत्र-फीसके खर्चके
		१,७२०-०-०	श्री पगार खर्चके
		४०-३-०	श्री डाक-तार खर्चके
		५०-०-०	श्री स्टेशनरी खर्चके
५७,५५७-२-९		५७,५५७-२-९	

श्री महादेव देसाअी स्मारक ट्रस्टका ३१ दिसम्बर, १९५३ के दिनका बेलेन्सशीट

फंड और देना जमा रु० आ० पा०			मिल्कियत और पावना नामे रु० आ० पा०		
१०,११,९८४-९-६		श्री फंड खाते	१०,१०,२५२-९-६		कर्ज दिया श्री नवजीवन संस्थाको, अुसकी प्लॉट नं० ९६ की जमीन और मकानोंकी अिक्वीटेबल गिरवी पर ब्याज-सहित
	१०,३९,०६३-१-९	पिछले बेलेन्सशीटके मुताबिक बाकी	१,७३२-०-०		श्री नकद तथा दूसरी बाकी
	२९-५-६	चालू सालमें बढ़ती		७३१-१०-९	श्री सेंट्रल बेंक ऑफ अिं० लि०के चालू खातेमें खजानचियोंके नाम पर
	१०,३९,०९२-७-३			९३०-९-९	श्री सेंट्रल बेंक ऑफ अिं० लि०के चालू खातेमें मंत्रियोंके नाम पर
	— २७,१०७-१३-९	श्री आय-व्यय खातेके		६९-११-६	नकद बाकी हाथ पर
	१०,११,९८४-९-६			१७३२-०-०	
१०,११,९८४-९-६			१०,११,९८४-९-६		

हमने श्री महादेव देसाअी स्मारक ट्रस्टके ता० ३१-१२-'५३के दिन पूरे हुअे वर्षका अूपरका बेलेन्सशीट और अुसी दिन पूरे हुअे वर्षके आय-व्ययका हिसाब हिसाब-बहियोंके साथ जांचा है, जिसमें आचार्य, महादेव देसाअी समाजसेवा विद्यालयका हिसाब ता० ३१-३-'५३ तक ही लिया गया है। अिसमें हमने हर तरहका जरूरी स्पष्टीकरण और जानकारी हासिल की है। हमारी मान्यताके अनुसार और हमें दिये गये स्पष्टीकरणों तथा संस्थाकी हिसाब-बहियोंके मुताबिक अूपरका बेलेन्सशीट संस्थाकी सच्ची स्थिति बताता है।

ता० ६-१-'५४
५१, महात्मा गांधी रोड,
बम्बअी

बाटलीबोअी कंपनी
चार्टर्ड अेकाअुण्टेन्ट्स,
मानद ऑडिटर्स

रविशंकर दवे
हिसाबनवीस
श्री म० दे० स्मा० ट्रस्ट

जीवणजी डा० देसाअी
ट्रस्टी-मंत्री
श्री म० दे० स्मा० ट्रस्ट

www.vinoba.in

अिस बुराअीका तुरन्त अिलाज होना चाहिये

[गांधीजीने अंग्रेजीके बारेमें जो लिखा है, अुसके कुछ हिस्से दक्षिण भारतके अेक मित्रने 'हरिजन'में अुद्धृत करनेके लिअे भेजे हैं। अुनमें से शिक्षाके माध्यमके रूपमें अंग्रेजीके अुपयोगसे सम्बन्ध रखनेवाले हिस्से नीचे दिये जाते हैं।]

अिस विदेशी भाषाके माध्यमने हमारे बच्चोंके दिमागोंको शिथिल कर दिया है, अुनके स्नायुओं पर अनावश्यक जोर डाला है, अुन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है, मौलिक विचारों और कार्योंके लिअे सर्वथा अयोग्य कर दिया है और अपनी विद्याको अपने परिवारके लोगों और आम जनता तक पहुंचानेमें अुन्हें असमर्थ बना दिया है। अिस विदेशी माध्यमने हमारे बच्चोंको अपने ही घरोंमें पूरा विदेशी बना डाला है। वर्तमान शिक्षा-प्रणालीके विषयमें यह सबसे बड़े दुःखकी बात है। अंग्रेजी भाषाके माध्यमने हमारी देशी भाषाकी बढ़तीको रोक दिया है। अगर मेरे हाथमें अेक तानाशाहकी सत्ता होती, तो मैं आज ही विदेशी माध्यम द्वारा हमारे लड़के और लड़कियोंकी शिक्षा बन्द कर देता और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरोंसे यह माध्यम तुरन्त बदलवाता या अुन्हें बरखास्त कर देता। मैं पाठ्य-पुस्तकोंकी तैयारीका अिन्तजार न करता। वे तो अिस परिवर्तनके पीछे-पीछे चली आवेंगी। अिस बुराअीका तो तुरन्त अिलाज होना चाहिये। (हिन्दी-नवजीवन, १–९–'२१)

अिस स्वयंसिद्ध बातको सिद्ध करनेकी कोअी जरूरत नहीं है कि किसी देशके बच्चोंको अपनी राष्ट्रीयताको बचाये रखनेके लिअे अपनी ही देशी भाषा या भाषाओंके जरिये सारी शिक्षा — अूंचीसे अूंची शिक्षा भी — मिलनी चाहिये। . . . अिससे बड़ा दूसरा वहम कोअी हो ही नहीं सकता कि फलां भाषाका विस्तार नहीं हो सकता। या अुसके जरिये गूढ़ या वैज्ञानिक बातें समझाओ ही नहीं जा सकतीं। भाषा अपने बोलनेवालोंके चरित्र और विकासका सच्चा प्रतिबिम्ब है।" (हिन्दी-नवजीवन, ५–७–'२८)

विदेशी शासनके अनेक दोषोंमें देशके बच्चों पर विदेशी माध्यम लादनेकी हानिकर बात अितिहासमें अेक सबसे बड़ा दोष गिनी जायगी। अिसने राष्ट्रकी शक्ति क्षीण कर दी है, विद्यार्थियोंकी आयु घटा दी है, अुन्हें आम जनतासे दूर कर दिया है और बिना कारण ही शिक्षाको खर्चीलो बना दिया है। अगर यह प्रक्रिया अब भी जारी रही, तो जान पड़ता है यह राष्ट्रकी आत्माको नष्ट कर देगी। (हिन्दी-नवजीवन, ५–७–'२८)

शिक्षाका माध्यम तो अेकदम और हर हालतमें बदला जाना चाहिये और प्रांतीय भाषाओंको अुनका वाजिब स्थान मिलना चाहिये। यह जो भयंकर बरबादी रोज-ब-रोज हो रही है, अिसके बजाय तो मैं अुच्च शिक्षामें अस्थायी रूपसे अव्यवस्थाको भी पसन्द कर लूंगा। (हरिजनसेवक, ९–७–'३८)

हमें अंग्रेजीसे कोअी द्वेष नहीं है। हमारा आग्रह केवल अितना ही है कि अुसे अपने अुचित क्षेत्रसे बाहर नहीं जाने देना चाहिये। . . . यह सोचना भी हमारी निर्बलताकी निशानी है कि अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है। (स्पीचेज अेण्ड राअिटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी; पृष्ठ ३९५-९९; २०–१०–१९१७)

आज अपनी मानसिक गुलामीकी वजहसे ही हम यह मानने लगे हैं कि अंग्रेजीके बिना हमारा काम नहीं चल सकता। (हरिजन-सेवक, २५–८–'४६)

विदेशी भाषाके माध्यमने, जिसके जरिये भारतमें अुच्च शिक्षा दी जाती है, हमारे राष्ट्रको बेहद बौद्धिक और नैतिक आघात पहुंचाया है। अभी हम अपने अिस जमानेके अितने नजदीक हैं कि हम अिस नुकसानकी भयंकरताका निर्णय नहीं कर सकते। (हरिजनसेवक, ९–७–'३८)

मो० क० गांधी

'बुनियादी शिक्षा'—अधपके विचार

यद्यपि पिछले १० वर्षोंसे बुनियादी शिक्षाका काम हो रहा है, फिर भी सर मिर्जा अिस्माअिल जैसे प्रसिद्ध लोग शिक्षाकी अिस नअी दृष्टिके पीछे रहे बुनियादी सिद्धान्तोंको नहीं समझ पाये हैं। राजपूताना-विश्वविद्यालयके पदवीदान-समारंभमें हालमें ही दिये गये सर मिर्जा अिस्माअिलके भाषणसे यह प्रगट होता है।

शिक्षा जीवनकी तैयारी है। अंग्रेजोंसे जो शिक्षा-प्रणाली हमें विरासतमें मिली, अुसका अुद्देश्य विद्यार्थियोंको होड़वाली सामाजिक और आर्थिक रचना पर खड़े जीवनके लिअे तैयार करना है; और अिस सामाजिक तथा आर्थिक रचनाकी बुनियाद वह विनिमय-पद्धति है, जिसमें बाजारों और कीमतोंका बड़ा महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। अैसी परिस्थितियोंमें मनुष्यके हर प्रयत्नको खरीद-बिक्रीकी चीज मान लिया जाता है। अिसलिअे विद्यार्थियोंकी दृष्टि अिसी बात पर रहती है कि अैसी शिक्षासे क्या लाभ अुठाया जा सकता है। यह शुद्ध अुपयोगितावादकी दृष्टि है।

दूसरी तरफ, बुनियादी शिक्षाकी पद्धति हमारे भावी नागरिकोंको सहकारी सामाजिक और आर्थिक रचनाके लिअे तैयार करती है, जिसका अुद्देश्य हरअेक मनुष्यके व्यक्तित्वका पूरा-पूरा विकास करना है। अुसमें भौतिक मूल्योंको, फिर अुनका कितना ही महत्त्व क्यों न हो, अन्तिम कसौटी नहीं माना जाता; वे केवल शिक्षा-पद्धतिकी क्षमताको तौलनेवाले माप भर रहते हैं। अिसमें श्रमको खरीद-बिक्रीकी चीज नहीं माना जाता, बल्कि अुसका ध्येय मानव आवश्यकताओंकी पूर्ति होता है। सहकारी सामाजिक व्यवस्थाकी जांचके लिअे होड़वाली अर्थ-व्यवस्थाकी कसौटीका अुपयोग करना वैसा ही गलत होगा, जैसे व्यापारी दृष्टिकोण रखनेवाले होटल या भोजनगृहकी तुलना अपने बच्चोंको पौष्टिक भोजन करानेकी अिच्छा रखनेवाली मातासे करना।

ये दो प्रकारकी शिक्षायें देशके नौजवानोंको दो बिलकुल विरोधी समाज-रचनाओंके लिअे तैयार करती हैं। अेककी पद्धति दूसरीके अुद्देश्यको पूरा नहीं कर सकती।

हमारे नेताओंको बुनियादी शिक्षाके बारेमें जल्दीमें समझे हुअे अूपर-अूपरके विचारोंसे ही सन्तोष नहीं मान लेना चाहिये, बल्कि अुसके पीछे रहे बुनियादी आदर्शोंके भीतर गहरे पैठना चाहिये। वर्ना हमारी नअी समाज-व्यवस्थाकी बदलती हुअी जरूरतें पूरी नहीं की जा सकेंगी।*

(अंग्रेजीसे)

जो० कॉ० कुमारप्पा

*फरवरी १९५४ की 'ग्रामोद्योग पत्रिका' से।

विषय-सूची

		पृष्ठ
अनोखी आवाजें	मगनभाई देसाई	४१७
भूदान-आन्दोलनकी कार्यप्रणाली	विनोबा	४१८
जबरदस्त फर्क	मगनभाई देसाई	४१९
माध्यमिक शिक्षामें बुनियादी सुधार		४१९
भूदानमें अगला कदम	मगनभाई देसाई	४२०
श्री महादेव देसाअी स्मारक ट्रस्ट सम्मेलन		४२१
श्री महादेव देसाअी स्मारक ट्रस्टका हिसाब — १९५३	जीवणजी डा० देसाअी	४२३
अिस बुराअीका तुरन्त अिलाज होना चाहिये	गांधीजी	४२४
'बुनियादी शिक्षा'—अधपके विचार	जो० कॉ० कुमारप्पा	४२४
टिप्पणी :		
स्वागत	म० प्र०	४२०

www.vinoba.in